2. अमात्य (Minister) — कौटिल्य के राजा का दूसरा आवश्यक तत्व अमात्य को मानता है। अमात्य के अन्तर्गत सिर्फ मंत्री ही नहीं, अपितु सब प्रकार के शासनाधिकारी शासन विभाग के अध्यक्ष एवं राज्य के अन्य कर्मचारी आते हैं। कौटिल्य के अनुसार राजा को मंत्रियों एवं कर्मचारियों के बिना सुचारू रूप से शासन का संचालन नहीं कर सकता है। राजा को ऐसे व्यक्तियों को अमात्य बनाना चाहिए जो सामर्थ्यवान बुद्धिमान एवं गुणवान हो उन अमात्यों में से श्रेष्ठ अनुभवी व्यक्तियों को ही मंत्री बनाने की सलाह देते हैं।

कौटिल्य ने मंत्रियों की संख्या कोई निश्चित नहीं की है। उसके अनुसार राज्य के आकार एवं सामर्थ्य के अनुसार ही मंत्रियों की संख्या होनी चाहिए, उसने यह भी स्पष्ट किया है कि राजा को तीन या चार मंत्रियों से परामर्श लेना चाहिए, उससे अधिक या कम से नहीं

कौटिल्य के अनुसार अमात्यों का कार्य राजा को परामर्श देना, जैसे कृषि, सेतुनिर्माण, राज्य की रक्षा के लिए उपाय सोचना, नये-नये गाँव बसाना उनका विकास करना इसके साथ ही अर्थ दण्ड तथा राजकीय कर की वसूली करना आदि।

3. जनपद (Territory) — कौटिल्य राज्य का तीसरा आवश्यक तत्व जनपद को मानता है। यद्यपि जनपद से उसका तात्पर्य सिर्फ भू-प्रदेश से नहीं है, बल्कि राज्य के निवासी एवं उसकी जनसंख्या से भी है। "कौटिल्य के अनुसार जनता के अभाव में राज्य की कल्पना नहीं की जा सकती है तथा जनपद के बिना राज्य का अस्तित्व असंभव हो जायेगा"। कौटिल्य का जनपद गाँव, संग्रहण खर्वटिक, द्रोणमुख एवं स्थानीय (निगम) में बंटा हुआ है। जनपद में वहाँ के निवासी भी सम्मिलित हैं, अतः निवासियों के गुणों पर भी प्रकाश डाला है।

भू-प्रदेश के आकार के विषय में उसने निश्चित रूप से कुछ नहीं बताया है, लेकिन अर्थशास्त्र में कुछ ऐसे संकेत मिलते हैं जिसके आधार पर कहा जा सकता है, कि कौटिल्य राज्य के छोटे आकार के पक्ष में है। कौटिल्य ने दूसरे अध्याय के (अधिकरण के) उन्नीसवें अध्याय में कौटिल्य ने राजा को स्वयं प्रजा की देख भाल करनी चाहिए, और यह तभी संभव है, जब राज्य का आकार छोटा हो।

Scanned with CamScanner

4. दुर्ग (Fort) — कौटिल्य के अर्थशास्त्र में इन्होंने इसे आवश्यक अंग माना है, क्योंकि राज्य की रक्षा के लिए इसका अस्तित्व आवश्यक है, शत्रुओं से राज्य की रक्षा के लिए दुर्गों का जनपद में जगह-जगह पर निर्माण किया जाना चाहिए। वे चार प्रकार के दुर्गों की चर्चा करते हैं, औदक दुर्ग, पर्वत दुर्ग, धान्वन दुर्ग, एवं वन दुर्ग।

औदक दुर्ग में वे दुर्ग आते हैं, जो चारों तरफ पानी से घीरे हो, पर्वत दुर्ग वैसे दुर्ग को कहते हैं जो पर्वत श्रेणियों अथवा बड़ी-बड़ी चट्टानों से घिरा हो। धान्वन दुर्ग ऐसे मरूस्थलीय प्रदेश में बने होते हैं जहाँ न पानी हो और न घास तथा वहां पहुचना शत्रु के लिए कठिन हो। तथा वन दुर्ग बीहड़ जंगलों में बना दुर्ग होता है ~~जहां~~ वहां भी शत्रुओं का पहुचना मुश्किल हो। इन चारों दुर्गों में से प्रथम दो दुर्ग शत्रु के आक्रमण से राज्य की सुरक्षा में सहायक होते हैं, तथा अंतिम दो दुर्ग राजा की सुरक्षा में सहायक होते हैं।

5. कोष (Fund) — कौटिल्य के राज्य का पंचम तत्व कोष है। राज्य की कार्यक्षमता एवं प्रगति कोष पर निर्भर करती है। कोष के द्वारा ही सेना का भरण-पोषण किया जा सकता है। तथा सैनिकों को संतुष्ट कर राजा उनकी भक्ति और श्रद्धा को पा-सकता है। कौटिल्य ने कहा कि कोष का संग्रह धर्मपूर्वक एवं न्याय संगत विधि से होना चाहिए। अतः कोष का राज्य में महत्वपुर्ण स्थान है।

6. दण्ड (Punishment) — मनु के समान ही कौटिल्य ने ने दण्ड को राज्य का महत्वपुर्ण अंग मानता है। वह दण्ड का अर्थ सेना से लेता है, उनका कहना है कि सेना राज्य की सुरक्षा का प्रमुख साधन है। उनका कहना है कि वंशक्रम के अनुसार लोगों को सेना में भर्ती होना चाहिए, ऐसा करने से सेना निपुण और दक्ष होती है। सेना में अधिकांश क्षत्रियों को सेना में लिया जाना चाहिए क्योंकि वे वीर निर्भिक, और युद्ध विद्या में निपुण होते हैं। वे चतुरंगी सेना जिसमें हाथी, घोड़े, रथ तथा पैदल सेना आते हैं, में विश्वास करते हैं।

राज्य में शांति व्यवस्था बनाने के लिए उसने अपनी कृति में "धर्मस्थीय (Civil law) तथा कंटकशोधन" (Criminal law) की व्यवस्था भी की है। राजा को दोनो को अपने राज्य

Scanned with CamScanner

की आरक्षता एवं निरंकुश प्रमुख बनाये रखने के लिए उपयोग करना चाहिए।

7. मित्र (Friends) — कौटिल्य के अनुसार राज्य की उन्नति के लिए या विपत्ति के समय राज्य की सहायता के लिए मित्रों की आवश्यकता होती है। अतः राजा का यह कर्तव्य है कि वह ऐसे व्यक्तियों या राजा से मित्रता करे जो, विपत्ति के समय उसकी सहायता कर सके। उसके अनुसार मित्र ऐसे हो जो पितृ - पितामह के क्रम से चले आ रहे हों। उनके अनुसार राजा को सदैव मित्रों को अपने बस में रखे और समय-समय पर उससे काम ले।

उपरोक्त राज्य के सातों तत्वों की चर्चा के बाद कौटिल्य का यह मत है कि इन सातों तत्वों में से सभी का सुदृढ़ एवं स्वस्थ होना चाहिए, क्यों सभी अंगों के परस्पर सहयोग से ही राज्य का संचालन सुदृढ़ और सुचारु हो सकता है।

अतः हम कह सकते हैं कि कौटिल्य का "सप्तांग सिद्धान्त" आज के राज्य के लिए भी सही प्रतीत होता है। कौटिल्य राज्य के तत्वों का वर्णन करके राजनीति के प्रति सिर्फ अपनी पैनी निगाह का ही परिचय नहीं दिया है, बल्कि राज्य जैसी अमूर्त निराकार और भावात्मक धारणा को मूर्त स्पष्ट और निश्चित करने का भी प्रयास किया है, जो बहुत हद तक सही भी है।

Scanned with CamScanner